अंतरफसल में सब्जी उत्पादन से बदली किसान की जिंदगी

मेहनत को सही दिशा दी जाये तो कार्य सफल होता है। ऐसी ही कहानी है, एक मेहनती, जुझारू, कर्मठ किसान की जो साधनो के अभाव में दिशाविहीन मेहनत कर रहा था। उसकी मेहनत को गति एवं दिशाप्रदान की नाबार्ड की महत्वकांक्षी जनजातिय विकास परियोजना ने। छुरिया विकासखंड के छोटे से ग्राम बजरंगपुर पोष्ट खोभा का एक किसान पृथ्वी खुरश्याम ने अपने कंधो पर बहुत छोटी उम्र मे जिम्मेदारियो का बोझ लेकर अपना एवं अपने परिवार का जीवन यापन समस्याओ से जुझकर कर रहा था। उसके परिवार मे पत्नि ललती बाई एवं दो बच्चे सुमन एवं सुनील तथा सास–ससुर भी हैं। उसके पास कूल 3 एकड़ खेत एवं 1 एकड़ पड़त भुमि थी जिसमे खेती करता और सीजन के बाद में मजदूरी करता था। इसी दौरान नागेश्वरा चेरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से उसे बाड़ी परियोजना से जोड़ा गया, जिसमे उसने अपने 1 एकड़ पड़त भूमि मे 30 आम, 20 नीबू, एवं 10 जाम के पौधे लगाये। इसके साथ–साथ अंतर्वर्ती फसल के रूप मे साग–सब्जी भी लगाई । पानी एवं घेराव की व्यवस्था सस्था के द्वारा किया गया। इसका लाभ पृथ्वी ने तत्पर्ता से लिया। पौधो के साथ–साथ अपनी साग–सब्जी को भी पानी एवं खाद आदि देता गया। कुछ ही माह मे साग–सब्जी के पौधो में फल लग गये। वही से एक सुखद संदेश वो पृथ्वी के लिये लेकर आये। जिसने पृथ्वी के जीवन को बदल दिया। आज रोजाना पृथ्वी इन सब्जियो को बेचकर 200से 300 रूपये रोज कमाता है। अगर आस–पास के गावो मे कही मेला, मंडई या बड़ा बाजार लगता है तो वहां साग–सब्जी बेचकर 500 रूपये तक कमा लेता है।

इसतरह पृथ्वी ने अपने जीवन को नागेश्वरा चेरिटेबल ट्रस्ट के साथ जाड़कर नाबार्ड की बाड़ी परियोजना से रूपांतरित किया है। वह एस.आर.आई. विधि से धान की खेती करके भी अब कम मेहनत, कम लागत एवं पानी के कम उपयोग करके अच्छी फसल भी लेता है।

****